अमीरे शरीअत मौलाना शाह अबू सऊद अहमद साहब बाक़वी (रह0)

आपका आगमन उस समय हुआ जब इस युग में अच्छे और सज्जन पुरुषों की कमी थी आकाल की इस परीक्षा में ऐसे ही महापुरुष का होना आज के वर्तमान समाज के लिए बहुमुल्य धरोहर है। हज़रत मौलाना शाह अबू सऊद अहमद बाक़वी रह0 एक ऐसे ही ईशपरायण, महान विद्वान, सहनशील, विनम्र धार्मिक पुरुष थे जो समस्त हिन्द महाद्वीप विशेषकर दक्षिण भारत के समस्त प्रदेशों के लिए एक बहुमुल्य हीरा थे, आप के योगदान और कार्यों से लोग असीमित लाभ उठाते रहेंगे।

नाम और ख़ानदानः

आप एक पढ़े लिखे और सम्पन्न परिवार के प्रकाशस्तभ थे आपका नामे नामी अबू सऊद अहमद, उपनाम अहमद और शीर्षक रईसुल उलेमा था, आप (रह0) के पिता हाफ़िज़ सूफ़ी मुहम्मद अब्दुल सत्तार साहब, दादा हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम साहब और परदादा हज़रत हाफ़िज़ मुहम्मद लब्बे साहब था।

मातृभूमि (वतन):

तामिलनाडु के प्रसिद्ध शहर विल्लौर के पास गांव विरिनजिपुरम Virinjipuram में दिनांक 11 रबीउल अव्वल 1329 हिजरी मुताबिक 13 मार्च सन् 1911 ईसवी दिन सोमवार को आपका जन्म हुआ।

हिफ़्ज़ और प्रारम्भिक शिक्षाः

आपके पिता हाफ़िज़ सूफ़ी मुहम्मद अब्दुल सत्तार साहब पांडीचेरी (तामिलनाडु) के एक छोटे से शहर पनरोटी में रहते थे। वहां पर हाफ़िज़ साहब इमामत के साथ दावत और सुधार का काम बहुत ही लगन व चिन्तन के साथ करते थे आपने अपने पिता से यही पनरोटी में पवित्र कुरआन के हिफ़्ज़ की शुरूआत की और बहुत ही कम समय में आप एक अच्छे और परिपक्व हाफ़िज़े कुरआन बन गये। कुरआन संस्मरण के पश्चात पिता ही से अरबी और फ़ारसी की शिक्षा सिखना शुरू कर दिया।

आलमियत व फ़ज़ीलतः

पन्द्रह साल की आयु में उच्च शिक्षा के लिए 1346 हिजरी बामुताबिक़ सन् 1927 ईसवी में प्रसिद्ध दीनी व अरबी दर्सगाह मदरसा बाक़ियातुस सालेहात वेल्लूर में आपने दाखिला लिया। यहां आपने पूरी मेहनत और लगन के साथ आलमियत व फ़ज़ीलत की शिक्षा के साथ फ़तवा लेखन का अभ्यास भी किया। 1352 हिजरी बामुताबिक़ सन 1933 ईसवी में स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त किया।

अफ़जलुल उलेमा और मुंशी फ़ाज़िल कोर्सः

विधार्थी जीवन में ही आपने अफ़ज़लुल उलेमा और मुंशी फ़ाज़िल के दोनों ही पाठक्रमों को विश्वविद्यालय से कर चुके थे। यह वह पाठयक्रम है जिसमें अभ्यार्थी को स्कूल कालेज और अन्य आधुनिक शिक्षा विभागों में शैक्षणिक नौकरी के अवसर मिल जाते थे।

कम आय वाली धार्मिक सेवा को प्राथमिकताः

शिक्षा प्राप्ति के पश्चात इस्लामिया हाई स्कूल मील व शारम दक्षिण आरकाट में दीनियात के शिक्षक के रूप में 17 वर्षों तक अपनी शैक्षणिक सेवाएं देते रहे।

ग़ैर मुस्लिमों में दावतः

इसी अवधि में शहर मील व शारम और इसके आसपास की मुस्लिम बस्तियों और ग़ैर मुस्लिम बस्तियों में आपने दावत व सुधार का काम बहुत ही हर्षों उल्लास के साथ भरपूर कोशिश की और इन्ही कामों को मज़बूत एक संगठित करने के लिए आपने एक संध ''अन्जुमन तब्लीग इस्लाम'' की स्थापना की।

बाक़ियातुस सालेहात में आपकी सेवाएंः

मदरसा बाक़ियातुस के सदर और इसके मान्यवर सदस्यों ने आपको संरक्षक और वित्तिय प्रबन्धक के पद पर कार्य करने के लिए राज़ी कर लिया। इस पद पर रहते हुए आपने समस्त ज़िम्मेदारियों को कुशलता से पूरा किया, आपने मदरसे के सरपरस्त और वित्त प्रबन्धक पद को रौनक बख़्शी। आप के काल में मदरसे का विकास और इसका विस्तार हुआ और छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई, इसी कारण मदरसे की आर्थिक दशा और समृद्ध एवं मज़बूत हो गयी।

मदरसा बाक़ियातु से अलाहदगीः

हज़रत मौलाना शाह मोहम्मद इल्यास रह0 के दावत व तब्लीग की कार्यशैली से न केवल

प्रभावित हुए बल्कि आप उसमें सक्रिय भी रहते थे। मदरसा बाक़ियातुस सालेहात में एक दिन दावत व तब्लिग़ से सम्बंधित बहुत ही अमान्य अवस्था पैदा हो गयी। जिस से आप का दिल टूट गया और गमगीन रहने लगे। कुछ दिनों तक बेचैन और बेचैनी आप पर छाई रही। अन्त में चिन्तन मन्न के पश्चात आपने मदरसा सालेहात को शुभ कामनाएं देते हुए उन्हें इस्तीफ़ा देकर वहां की सेवाओं से पदमुक्त हो गये।

दारुल उलूम सबीलुर्रशाद की स्थापनाः

बाक़ियातुस सालेहात से अलग होने के बाद आपने सरज़मीन टीपू के एतिहासिक स्थल बैंगलोर की यात्रा की और एक मदरसा दारुल उलूम सबीलुर्रशाद की स्थापना की, आज दारुल उलूम सबीलुर्रशाद बंगलोर से फ़ुज़ला, उलेमा, हाफ़िज़ और क़ारी देश और विदेश में दीनी, शैक्षणिक अनुसंधानीय, सुधार और अन्य विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं।

ख़लीफ़ाः

आपको ख़िलाफ़त हज़रत शैख़ मौलाना ख़्वाजा सईद अहमद किरनूरी रह0, ख़लीफ़ा हज़रत हकीमुल उम्मत शैख़ मौलाना मुहम्मद अशरफ़ अली थानवी रह0 ने प्रदान की, चुनान्चे आप से बड़ी संख्या में लोग लाभावित्त होते रहे।

कर्नाटक में इमारते शरिया की स्थापनाः

राज्य बिहार के शहर पटना में आल इण्डिया मुस्लिम एजूकेशनल सोसाईटी के द्वारा महीना नवम्बर सन् 1973 ई0 में एक तालीमी कानफ्रेन्स का आयोजन हुआ उस अवसर पर राज्य कर्नाटक के हज़रत डाक्टर मुमताज अहमद ख़ान साहब संस्थापक अल अमीन बंगलौर की सेवाओं को देखकर काफ़ी प्रभावित हुए थे। उसी समय बंगलौर के कुछ सदस्यों ने दारुल क़जा के कार्यक्रमों का जायज़ा लेकर कर्नाटक में भी उस संस्था की स्थापना का इरादा किया था।

अमीरे शरीयत की नियुक्तिः

पटना के तालीमी कानफ्रेन्स में बंगलौर लौटने के बाद कर्नाटक प्रदेश के बुद्धिजीवियों ने कर्नाटक में इमारते शरीया क़ायम करने के लिए दारुल उलूम सबीलुर्रशाद और शहर बंगलौर में विचार विमर्श किया, इमारते शरीया की स्थापना और अमीरे शरीयत के इन्तेख़ाब के शीषर्क पर एक सभा का आयोजन हुआ जिस में उपस्थित लोगों के एकमत और सुझावों से आप को ''अमीरे शरीयत'' निर्वाचित किया गया, आप जीवन्तपर्यन्त इसके सभापति रहे।

शरई दारुल क़ज़ा की स्थापना:

इस आयोजन के कुछ दिनों के पश्चात आपकी अध्यक्षता में केन्द्रीय दारुल क़ज़ा की स्थापना हुई हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ शरक़ी साहब को क़ाज़ी और धर्मापदेशक, मुहम्मद ज़करिया साहब को नायब क़ाज़ी नियुक्त किया गया। दारुल क़ज़ा का कार्यालय मदरसा मिस्कातुल उलूम संगीन जामा मस्जिद, तारामण्डल बंगलौर शहर में स्थापित किया गया। सन् 1987 ई0 दारुल उलूम सबीलुर्रशाद में दारुल क़ज़ा की नयी इमारत का शुभारंभ आप की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें विशेषरूप से अमीरे शरीयत हज़रत मौलाना शाह मिन्नातुल्लाह रहमानी और दारुल क़ज़ा के न्यायधीश मौलाना मुजाहिदुल इस्लाम क़ासमी रह0 सम्मिलित हुए।

पद और ज़िम्मेदारियां:

प्रबन्धक:	दारुल उलूम सबीलुर्रशाद बंगलौर
सभापति शरीयत:	कर्नाटक प्रदेश
उप–सभापति:	आल इंण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड
संरक्षक:	इस्लामिक फ़िक़्ह एकेडमी इण्डिया
	आल इण्डिया मिल्ली कौंसिल
सदस्य मज्लिसे शूरा:	दारुल उलूम देवबन्द
	दारुल उलूम नदवतुल उलेमा लखनऊ
	मदरसा मोईनुल उलूम वनियम बाड़ी
	दारुल उलूम ताजुल मसाजिद भोपाल
	जामिया अनवारुल उलूम लिचना पल्ली
प्रबन्धक:	मदरसा दाऊदिया एरोड़
	दारुल उलूम सबीलुस्सलाम पंगनूर
	दारुल उलूम सिद्दीक़िया, मैसूर

देश के विभिन्न राज्यों के अरबी मदरसों और धार्मिक संस्थानों के अध्यक्ष और संरक्षक रहे।

आपने मक्का मदीना की यात्रा के अतिरिक्त संयुक्त अरब अमीरात, वेस्ट इण्डिज़, मलेशिया, श्रीलंका, सिंगापूर, मालद्वीप इत्यादि देशों की यात्राएं की, आप की लेखन एवं रचनाओं में एहकामे इस्लामी, एहकामे निकाह', बाबे कुरआन, तज्वीदुल कुरआन बहुत ही प्रसिद्ध हैं और मदरसों के पाठयक्रमों में सम्मिलित है।

सन्तानें:

- हज़रत मौलाना हाफ़िज़ क़ारी मुफ़्ती मुहम्मद अशरफ अली साहब बाक़वी
- हज़रत मौलाना मुहम्मद वलीउल्लाह साहब रशादी
- हज़रत मौलाना हाफ़िज़ क़ारी इमदादुल्लाह साहब रशादी
- हज़रत मौलाना हाफ़िज़ क़ारी लतीफुल्लाह साहब रशादी

देहान्त:

कुछ दिनों की बीमारी के पश्चात ज्ञान और बुद्धिमान्ता और यूक्ति से परिपूर्ण सूर्य 7 शव्वाह 1416 हिजरी बा मुताबिक़ 27 फरवरी सन् 1996 ई0 को अस्त हो गया। दारुल उलूम सबीलुर्रशाद बंगलौर की मस्जिद के बाहरी पश्चिमी दक्षिणी दिशा में आपका विश्राम स्थल है।

☆☆☆